अलोकिक गीतांजलि - 8

☐ अंधकार मन का मिटे

अंधकार मन का मिटे, तन का कटे क्लेश

आत्म-तृप्ति सुख-शान्ति का, एक यही संदेश

योगी बनो, पवित्र बनो, जीवन में सच्चरित्र बनो....

निर्मल मन हो, निश्छल वाणी, हृदय में छलके प्यार

बहे ज्ञान की पावन गंगा, स्वर्ग बने संसार

योगी बनो, पवित्र बनो....

मन मधुबन हो, दिव्य गुणों की फैले मधुर सुवास

अमर त्याग की दीपशिखा बन, घर-घर करो प्रकाश

योगी बनो, पवित्र बनो..

➢➢ अंधकार मन का मिटे, तन का कटे क्लेश

➳ _ ➳ मन में कौन कौन से अन्धकार है ?

→ विस्मृति का अन्धकार

→ अज्ञान का अन्धकार

→ कमी कमजोरियों का अन्धकार

→ आसक्तियों का अन्धकार

→ इच्छाओं / तृष्णाओ / अपेक्षाओं का अन्धकार

➢➢ आत्म-तृप्ति सुख-शान्ति का, एक यही संदेश

➳ _ ➳ आत्म तृप्ति अर्थात संतोष अर्थात परम विश्राम

→ परमात्म मिलन / प्यार / प्यास / साथ / छत्रछाया पाने पर

- पावरफुल अमृतवेला होने पर
- किसी विकार / संस्कार / आदत पर विजय प्राप्त करने से
- दिल से / निस्वार्थ भाव से / निमित भाव से की हुई सेवा
- मुरली चिंतन से

→ सांसरिक इच्छाएं आत्मा को और विरक्त करती है

- अध्यात्म में जिसे “पाना” कहा जाता है... संसार में उसे “खोना” कहा जाता है
- अध्यात्म में जिसे “खोना” कहा जाता है... संसार में उसे “पाना” कहा जाता है

➢➢ योगी बनो, पवित्र बनो, जीवन में सच्चरित्र बनो....

➳ _ ➳ जो व्यक्ति बुधीवान है, Scientist है पर यह जरूरी नहीं की वह चरित्रवान हो

➳ _ ➳ सच्चरित्र का सम्बन्ध ब्रहमचर्य से है

➳ _ ➳ चरित्र इस संसार का सबसे बड़ा धन है

→ जीवन बेदाग़ हीरा हो... निष्कलंक हो...

➢➢ निर्मल मन हो, निश्छल वाणी, हृदय में छलके प्यार

➳ _ ➳ खोटे दिल पर माया राज़ी

➢➢ बहे ज्ञान की पावन गंगा, स्वर्ग बने संसार

➢➢ मन मधुबन हो

➳ _ ➳ मन (मधुबन) में चार धाम बसे हो

➳ _ ➳ मन (मधुबन) में सेवाएं होती रहे

➳ _ ➳ मन (मधुबन) में भट्टियां होती रहे

➳ _ ➳ मन (मधुबन) में मुरली चलती रहे

➳ _ ➳ मन (मधुबन) में बाबा का पधरामणि होती रहे

➢➢ दिव्य गुणों की फैले मधुर सुवास

➢➢ अमर त्याग की दीपशिखा बन, घर-घर करो प्रकाश